03/07/2020

Social Psychology

Paper V

B.A. III (Hons.)

Explain the Functions of Group.

समूह के कार्यों का वर्णन करें|

समूह अपने सदस्यों के लिए अनेकों कार्य करता है| विभिन्न तरह के समूह अपने सदस्यों के लिए भिन्न-भिन्न तरह के कार्य करता है| इन समूह के कुछ सामान्य कार्यों का वर्णन निम्नलिखित है-

1) आवश्यकताओं का विभेदीय संतुष्टि (Differential satisfaction of wants) –

अपने सदस्यों की आवश्यकताओं की संतुष्टि करना समूह का एक प्रमुख कार्य है| किसी भी समुह में दो प्रकार के सदस्य होते हैं- प्रभावी एवं महत्वपूर्ण सदस्य (dominant and important member) तथा अप्रभावी एवं साधारण सदस्य (non-dominant and rank-and-file member)। प्रभावी सदस्य ऊँची कोटि के होते हैं तथा सभी महत्वपूर्ण निर्णय इन्ही लोगों द्वारा लिए जाते हैं। उदाहरण के तौर पर विश्विद्यालय में कुलपति एवं कुलसचिव प्रभावी सदस्य होते हैं। अप्रभावी सदस्य साधारण होते हैं जो प्रभावी सदस्यों के कार्यों में मदद करते हैँ। विश्वविद्यालय में clerk लोग साधारण सदस्य के उदाहरण हैं। समूह प्रभावी सदस्यों की सभी महत्वपूर्ण आवश्यकताओं की तथा साधारण सदस्य की ज़रूरी आवश्यकताओं जैसे - भोजन, कपड़ा, मकान आदि की पूर्ती करने की कोशिश करता है। इस तरह समूह अपने सदस्यों की आवश्यकताओं की पूर्ती समान रूप से न कर विभेदित कर के करता है।

2) आधिपत्य आवश्यकताओं की पूर्ति (Satisfaction of power need)-

समूह के माध्यम से व्यक्ति के आधिपत्य आवश्यकताओं की भी पूर्ति होती है। दूसरों से श्रेष्ट होने की आकांक्षा सभी व्यक्तियों में पायी जाती है परन्तु नेताओं में यह इच्छा अधिक प्रबल होती है। समूह में ही नेताओं के इन इच्छाओं की पूर्ति होती है। किसी भी समूह में सदस्यों की अपेक्षा नेताओं के आवश्यकताओं की अधिक संतुयष्टि होती है। नेता अपने अनुयाइयों पर आधिपत्य रखते हैं तथा कार्य करने के लिए आदेश देते हैं। ऐसा करने से नेता के आधिपत्य भाव की पूर्ति होती है। **Myers**, 1987 तथा **Feldman**, 1985 के अनुसार "समूह कुछ सदस्यों की आधिपत्य आवश्यकता को पूरा कर के अन्य सदस्यों को भी आधिपत्य आवश्यकता तीव्र करने की प्रेरणा देता है।"

3) नई आवश्यकताओं का निर्माण (Creation of new needs) –

समूह सिर्फ आवश्यकताओं की पूर्ति ही नहीं करता है बल्कि नई-नई आवश्यकताओं का सृजन भी करता है। जैसा की हम जानते हैं व्यक्ति की आवश्यकताएं न तो सीमित है और न स्थिर। जब व्यक्ति अपनी खास-खास आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किसी समूह का सदस्य होता है तो उसकी इन आवश्यकताओं की पूर्ति तो हो ही जाती है साथ ही साथ कुछ नई आवश्यकताएं भी पैदा हो जाती हैं। इसका लाभ यह होता है की समूह का अस्तित्व तो बना ही रहता है साथ ही साथ उसका कार्यक्षेत्र भी विकसित हो जाता है। इन नई आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए अपने जान की बाज़ी भी लगा देने में हिचकिचाते नहीं हैं। वे यह समझते हैं की इन नयी आवश्यकताओं की संतुष्टि नहीं होने पर समूह का अस्तित्व खतरे में पड़ जा सकता है। अतः वह अपनी जान जोखिम में दाल कर भी इन आवश्यकताओं की पूर्ति करने की कोशिश करता है। ऐसे नई आवश्यकताओं का सृजन समूह स्वयं को अधिक प्रभावकारी बना लेता है।

4) व्यक्ति का समाजीकरण (Socialization of individuals) –

समूह द्वारा व्यक्ति का समाजीकरण भी होता है। विभिन्न सामाजिक समूहों जैसे - परिवार, खेल का समूह, कॉलेज, धार्मिक समूह, राजनैतिक समूह आदि का योगदान व्यक्ति के समाजीकरण में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से होता है। जब कोई व्यक्ति किसी अच्छे सामजिक समूह जैसे- धार्मिक समूह, स्कूल, कॉलेज का सदस्य बनता है तो वह अपने सामजिक व्यव्हार को उनके मानदंडों के अनुसार परिवर्तित करता है तथा उससे कुछ सीखता भी है। उसी तरह अगर व्यक्ति किसी बुरे सामाजिक समूह जैसे - चोर, डकैत तथा बदमाशों के समूह का सदस्य किसी कारण से बन जाता है तो वह असामाजिक व्यवहारों को अधिक सीखता है।

5) सांस्कृतिक निरंतरता को बनाये रखना (To maintain cultural continuity) –

समूह सांस्कृतिक निरंतरता को भी बनाये रखने में मदद करता है। जैसा की हम जानते हैं, प्रत्येक समूह की अपनी कुछ विशेषताएं, मूल्य परम्पराएं प्रथाएं आदि होती है जिन पर संस्कृति का स्पष्ट मोहर लगा होता है। एक समूह जितने समय तक इन मूल्यों, परम्पराओं, प्रथाओं एवं आदर्शों को बनाये रखता है, उतने समय तक सांस्कृतिक निरंतरता भी बनी रहती है। दूसरे शब्दों में सदस्यों के व्यवहारों पर इन मूल्यों, परम्पराओं एवं प्रथाओं द्वारा संस्कृति का प्रभाव उतने समय तक बना रहता है। इस तरह से समूह सांस्कृतिक निरंतरता को भी बनाये रखने में मदद करता है।

6) अनेकों समूहों की सदस्यता (Multiple group members) -

समूह अपने कुछ सदस्यों को खास कर के साधारण सदस्यों को अप्रत्यक्ष रूप से दूसरे समूह या समूहों का सदस्य बनने के लिए कुछ कारणों से प्रेरित करता है। ऐसे तीन कारण प्रमुख हैं –

- समूह के सदस्य की आवश्यकताएं धीरे-धीरे विशिष्ट होती चली जाती है।

- सदस्यों की बदलती हुयी नयी आवश्यकताओं के अनुसार समूह अपने-आप में परिवर्तन नहीं ला पता है।
- समूह अपने सदस्यों की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करने में असमर्थ होता है।

इन्हीं कुछ कारणों से समूह अपने कुछ सदस्यों को विशेषकर साधारण सदस्यों को ही कोई नया समूह का सदस्य बनने के लिए बाध्य करता है। जहां तक संभव होता है समूह अपने प्रभावकारी सदस्यों को इन कारणों या कोई अन्य कारणों से भी किसी अन्य समूह का सदस्य बनने की प्रेरणा नहीं देता है क्यूंकि ऐसा करने से समूह का अस्तित्व ही खतरे में पड़ सकता है।

स्पष्ट हुआ की समूह अपने सदस्यों के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के कार्य करता है। इन कार्यों के करने से समूह का अस्तित्व एवं समूह की गरिमा बानी रहती है।

Dr. Hena Hussain

Asst. Professor

Department of Psychology

Oriental College, Patna City

WhatsApp No. – 9334067986

Email-drhenahussain@gmail.com